समाजिक विकास में बौद्ध धम्म का योगदान

निशि कमल

शोध छात्रा, शिक्षा संकाय, रामचन्द्र चन्द्रवंशी विश्वविद्यालय, पलामू, झारखण्ड

सार

बौद्ध धर्म में सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था लोकतांत्रिक और साम्यवादी आदर्शों पर आधारित थी। राजकुमार सिद्धार्थ का जन्म कपिलवस्तु में हुआ था, कपिलवस्तु जनपद में गणतांत्रिक प्रणाली विद्यमान थी। बुद्ध ने स्वतंत्रता, समानता, मैत्री और बन्धुत्व के आधार पर समाजिक और आर्थिक व्यवस्था की नींव डाली। उन्होंने मनुष्य के उन सभी विकृत और अदृश्य बन्धनों को अपने उपदेशों से उन्हें विमुक्त कर दिया जो आजतक धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक विधानों एवं परम्पराओं से जकड़े हुए थे। उन्होंने जन-साधारण को सूचित किया कि सभी मनुष्य समान हैं। कोई भी मनुष्य अपनी बुद्धि और विवेक का प्रयोग कर समाज में किसी भी पद और प्रतिष्ठा को प्राप्त कर सकता है। कोई भी पद किसी वर्ग-विशेष के लिए सुरक्षित नहीं है। हर व्यक्ति स्वयं अपना भाग्य-निर्माता और विधाता है। अगर वह दु:खी है तो उसका कारण वह स्वयं है, अगर सुखी है, तो उसका भी कारण वही है लेकिन, जब मनुष्य अपने से बाहर उस कारण को खोजने लगता है, वहीं पर आध्यात्मिकता शुरू हो जाती है। बुद्ध ने कार्य-कारण-नियम देकर मानव को यह संदेश दिया कि कोई भी कार्य बिना कारण के नहीं हो सकता है, उस कारण का निवारण कर देने पर कार्य सम्पन्न हो जाता है।

शब्द कुँजी:

भारतीय इतिहास में बुद्ध और बौद्ध धर्म का युग ऐतिहासिक युग माना गया है। इस युग को भारत में द्वितीय नागरीकरण का युग भी कहा जाता है क्योंकि सिन्धु-सभ्यता के बाद बुद्ध के समय के स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद वहाँ जो उत्खनन-कार्य हुए हैं, उनसे भी प्राप्त तत्कालीन सामग्रियों से भी ज्ञात होता है कि नगरीय सभ्यता के अवशेष प्राप्त होते हैं। आर्थिक दृष्टि से यह युग, सुखी-सम्पन्न युग था। उन दिनों कृषि, शिल्प-उद्योग और व्यापार सभी उन्नति पर थे। कृषि की महत्ता थी कि शाक्य गणराज्य में कृषि-महोत्सव मनाया जाता था। जिसमें राजा भी अपने हाथ से हल चलाता था।

बौद्ध धर्म में सामुदायिक स्वामित्व पर भी बल दिया गया जिसके उत्कृष्ट उदाहरण शिल्पीसंघ (श्रेणियाँ) थीं यही नहीं श्रावस्ती के जेतवन विहार को जब सेठ अनाथपिण्डक ने भगवान बुद्ध को दान देना चाहा, तो उस समय बुद्ध ने कहा था कि ''श्रेष्ठि! इसे बुद्ध के लिए नहीं, बल्कि इसे विभिन्न दिशाओं से आने वाले आगत, अनागत एवं वर्तमान भिक्षु-संघ के लिए दान करों'' इससे यह स्पष्ट होता है कि वे व्यक्तिगत स्वामित्त्व के पक्षधर नहीं थे, क्योंकि व्यक्तिगत स्वामित्व देश की आर्थिक प्रगति के लिए सबसे बड़ी बाधा है और पूँजीवादी की जननी है। जो किसी भी देश के लिए हानिकारक है। आज मनुष्य के लिए वैचारिक स्वतंत्रता की भी आवश्यकता है।

आय को किस प्रकार खर्च किया जाय, आर्थिक विकास के लिए यह भी एक विचारणीय प्रश्न है। इस विषय में भी बौद्ध धर्म में स्पष्ट निर्देश प्राप्त होता है। 'सिगालोवाद सुत्त' में स्वयं भगवान बुद्ध ने यह आदेश दिया है कि सुखी जीवन के लिए आवश्यक है कि मनुष्य आय वृद्धि के साथ-साथ व्यय पर भी नियंत्रण करें। आय को चार भागों में बाँटना चाहिए। एक भाग से अपने घर का खर्च चलाना चाहिए। दो भागों से जीवन-यापन के लिए कोई न कोई कार्य करना चाहिए और चौथे भाग को भविष्य के लिए सुरक्षित रखना चाहिए ताकि आवश्यकता पड़ने पर दूसरे के सामने हाथ न फैलना पड़े। महामानव बुद्ध ने फिजूल खर्ची को कम करने के लिए अपने पंचशील में यह निर्देशित किया कि शराब, ताड़ी अन्य मादक द्रव्य,धूम्रपान का सेवन न किया जाय और मादक

स्थानों यथा-जुए के खेल का स्थान आदि का भी सेवन न किया जाय। इस प्रकार बौद्ध धम्म में सामाजिक उत्थान की स्पष्ट रूप रेखा प्रस्तुत करता है।

बौद्ध धम्म ने करुणा, मैत्री तथा त्याग के उपदेशों से ही बड़े-बड़े राजाओं-महाराजाओं और सेठ-साहूकारों के मन को परिवर्त्तित किया जिससे उन्होंने स्वत: अपना धन देकर लोगों के कल्याण हेतु खर्च किया। बौद्ध सम्राट अशोक के ''जियो और जीने दो'' के उपदेश और संदेश को कौन नहीं जानता। करूणा और मैत्री तथा की भावना से ही प्रेरित होकर राजाओं, सेठों ने बौद्ध विहार, विश्वविद्यालयों की स्थापना करवाई। श्रावस्ती, नालन्दा, तक्षशीला, सारनाथ, विक्रमशिला, ओदन्तपुरी, बल्लभी ऐसे विद्या-केन्द्र थे जिनकी स्थापना त्याग-भावना से प्रेरित होकर ही करवाई गई थी।

उपर्युक्त विवरण से यह सिद्ध है कि भारत के सामाजिक एवं आर्थिक विकास व गरीबी-निवारण के लिए पूर्व की भाँति आज भी बौद्ध धर्म पूर्णरूपेण सक्षम है। बुद्ध के विचारों से ही देश व समाज में सुख-शान्ति व समृद्धि स्थापित हो सकती है। इसलिए बाबा साहेब अम्बेडकर ने सदैव ''प्रबुद्ध भारत'' की परिकल्पना की थी। आर्थिक विकास या सम्पन्नता का तात्पर्य है कि उस सम्पन्नता से दु:खी लोगों का दु:ख दूर हो, उन्हें अभाव का जीवन न जीना पड़े, लोग निर्भय हों अर्थात धनवान या शक्ति सम्पन्न लोग दूसरों को भयभीत न कर सकें। लोग शोकमुक्त जीवन बिता सकें। आज भी बौद्ध धर्म में यही मंगल कामना की जाती है कि संसार के सभी दु:खी लोगों का दु:ख दूर हो, भयभीत लोग निर्भय हों, शोक से पीड़ित लोग शोक मुक्त हों और एक आदर्श समाज का निर्माण कर विकास के मार्ग पर बढ़े। बौद्ध धम्म के सांस्कृतिक महासागर में अनेक प्रकार के रत्न अभी भी अदृश्य पड़े हुए हैं। बुद्ध का व्यक्तित्व आर्कषक और विशाल था। उनके उपदेशों का प्रमुख क्षेत्र मानव-समाज था। और उनके धर्म का केन्द्र बिन्दु भी मानव-कल्याण ही था। इसीलिए उन्होंने मनुष्य के कल्याण के लिए जो स्वस्थ पथ-प्रदर्शन किया, वहीं बौद्ध धम्म कहलाया। उन्होंने दु:ख और शोषण से पीड़ित लोगों को उससे मुक्त होने का मार्ग बतलाया, लेकिन उन्होंने कभी भी अपने को ''मुक्ति-दाता'' नहीं कहा।

वर्तमान समय में तथागत बुद्ध के उपदेशों की प्रासंगिकता

विश्व के इतिहास में सर्वोत्तम महापुरुष गौतम बुद्ध हैं। इनका प्रादुर्भाव उस समय हुआ जिस समय देश में अराजकता चरम सीमा पर पहुँच चुकी थी। उन्होंने जिस कारण-सिद्धान्त की स्थापना की इसे प्रतीत्य समुत्पाद कहते हैं, जिसका तात्पर्य है कि बिना कारण के कोई भी कार्य नहीं होता। बुद्ध ने समाज और संसार को देखकर अनुभव किया था कि संसार का प्रत्येक व्यक्ति दु:खी है। धनवान व्यक्ति धन की सुरक्षा के लिए परेशान है। गरीब व्यक्ति भोजन, कपड़े आदि के लिए परेशान है। इस दु:ख का कारण तृष्णा है। तृष्णा का विकास निरन्तर होता रहता है। सौ से हजार, हजार से लाख और लाख से करोड़ पाने की इच्छा ही तृष्णा है। यह तृष्णा रोकी जा सकती है जिससे दु:ख का निरोध हो सकता है। इस तृष्णा को रोकने का उपाय बुद्ध ने बतलाया है इसे दु:ख-निरोध गामिनी अष्टांगिक मार्ग कहा गया है। जैसे- सम्यक् दृष्टि, सम्यक् चिन्तन,सम्यक् वाणी,सम्यक् कर्म,सम्यक् आजीविका,सम्यक् व्यायाम,सम्यक् स्मृति,सम्यक् समाधि है।

तथागत बुद्ध ने समाज के विकास के लिए घूम-घूम कर लोगों को उपदेश दिया। इनके दर्शन तथ्य से पड़े थे। बुद्ध की देशना है कि अज्ञान और अंध विश्वास मनुष्य की प्रगति में सबसे बड़ी बाधा है। इसलिए सबसे पहले मनुष्य को इन अंधविश्वासों और अज्ञान (अविधा) से मुक्त होना चाहिए। बुद्ध के समय में भय-निवारण, स्वर्ग-प्राप्ति के लिए लोग नदियों, पर्वतों, वनों की पूजा-अर्चना करते थे, पशुओं की बलि देते थे और महीनों चलने वाले बड़े-बड़े यज्ञ करते थे। बुद्ध ने कहा इनसे अज्ञान दूर नहीं होता और शान्ति की प्राप्ति नहीं होती। मनुष्य को अपनी प्रगति के लिए खुद प्रयास करना होगा! हे! मानव तू अपना स्वामी स्वयं है, कोई दूसरा तेरा स्वामी कल्याण करने वाला नहीं हो सकता। बुद्ध तो केवल दु:ख से छुटकारा दिलाने का रास्ता दिखलाने वाले हैं। इस पर स्वयं चलकर ही लक्ष्य, और शांति की प्राप्ति हो सकती है।

बुद्ध की शिक्षा न तो निराशावादी है और न आशावादी हीं। यदि वह कुछ है तो यथार्थवादी है क्योंकि

वह जीवन और संसार की वास्तविकता पर विचार करती है। बुद्ध ने विषमता को हटाकर समतामूलक समाज की स्थापना की। उन्होंने वर्णवाद, जातिवाद, छूआ-छूत, ऊँच-नीच आदि सभी विषमतामूलक व्यवस्थाओं को खत्म करने का प्रयास किया था तथा समतावादी, लोकतांत्रिक समाज की रचना की। महिलाओं को शोषण, अत्याचार और अन्याय से मुक्त किया, दलितों, पिछड़ों, अल्पसंख्यकों और बहुजनों को छुआ-छूत, तथा अंधविश्वास से मुक्ति दिलायी और उनमें नव चेतना जागृत कर उनके लिए आदर्श मार्ग दिया। उन्होंने मानव-समाज को एक सूत्र में बांधने वाले तत्त्व करुणा, दया, मैत्री, मृदुवचन आदि अपनाने की बात कही जिनके पारस्परिक व्यवहार से सामाजिक एकता और सौहार्द की वृद्धि होती है । तथागत बुद्ध ने पारस्परिक व्यवहार की इन सभी बातों को पाँच सूत्रों में बताया है जो संसार में पंचशील के नाम से प्रसिद्ध है । यह पंचशील का सिद्धान्त बड़ा मानवोपयोगी है। पंचशील का पालन कर समाज का उत्थान कर सकता है। वास्तव में यह पंचशील का सिद्धान्त प्रत्येक मनुष्य के लिए अपने दिन-प्रतिदिन के जीवन और कार्य-कलापों के मूल्यांकन करने का पैमाना है।

प्रत्येक मनुष्य अपना कल्याण चाहता है। मनुष्य की कार्य-शुद्धता, मन की शुद्धता पर निर्भर करती है। इसलिए आवश्यक है कि कार्य शुद्ध मन से किया जाए। वैर कभी भी वैर से शान्त नहीं होता, बल्कि दूरी बढ़ती जाती है। बैर तो मित्रता के भाव से ही दूर होती है। यही बुद्ध का उपदेश है। यह सिद्धान्त मनुष्य की शत्रुता के स्थान पर मित्रता और कटुता के स्थान पर सौहार्द भाव उत्पन्न करता है। आज विश्व के शक्तिशाली राष्ट्र अपने अस्त्र-शस्त्रों से अन्य राष्ट्रों को गुलाम बनाकर रखना चाहते हैं। बौद्ध ध म्म ने उपदेश दिया कि 'जीयो और जीने दो'। आज भी यह युक्ति विश्व को विनाश से बचाने के लिए सक्षम है।

बुद्ध सभी वर्ग की महिलाओं एवं पुरुषों को समान सामाजिक बराबरी दिया। महिलाओं को भी संध में प्रवेश देकर महाप्रजापति गौतमी के नेतृत्व में भिक्षुणी-संघ का निर्माण किया। बुद्ध ने भिक्षुणियों को स्वालम्बन तथा आत्म-रक्षा का पाठ पढ़ाया। उन्होंने स्वयं वैशाली की नगरवधू (गणिका) के यहाँ जाकर भोजन किया। बुद्ध ने कपिलवस्तु के राजा अद्धिय, नाई, उपालि, भंगी सुनीत, डाकू अंगुलिमाल, महारानी खेमार (विम्वीसार की पत्नी) प्रकृति नामक चण्डालीन को बुद्ध धम्म में दीक्षित कर संध में प्रवेश दिया। संध में प्रवेश के बाद की आयु ही सम्मान का आधार, न कि जाति, वर्ण, धन या अन्य कोई और आधार रखा।

महामानव तथागत बुद्ध ने मानव को प्रेरणा-स्वरूप ज्योति प्रदान की और जोर देकर कहा कि:-

तुम सत्य और न्याय के लिए संघर्ष करो।

सत्य और न्याय के साथ रहो।

सत्य और न्याय के लिए जिओ।

सत्य और न्याय के लिए कार्य करो।

सत्य तथा न्याय के लिए मरो ।

बुद्ध की त्रिशरण, पंचशील और अष्टांगिक मार्ग के सिद्धान्त को ग्रहण करके मनुष्य सुखी रह सकता है और अपने परिवार, समाज एवं राष्ट्र विकास कर सकता है। विश्व में शांति स्थापित की जा सकती है । मनुष्य मानसिक गुलामी को त्याग कर उनमें नयी चेतना पैदा किया जा सकता है। उन्होंने मानव का नये किस्म से साक्षात्कार किया था तथा बिना एक बूंद खून बहाए विश्व-शांति की स्थापना की। बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर के अनुसार बुद्ध का धम्म एक सामाजिक सन्देश है। बुद्ध ने समाज में शांति एवं सद्भाव बनाये रखने के लिए न्याय, मैत्री, स्वतंत्रता, समानता, और भ्रातृत्व भाव की शिक्षा दी है। बुद्ध के नाम पर आज तक किसी सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक शोषण नहीं हुआ है। बौद्ध धम्म मनुष्य की उच्चत्तम नैतिक चेतना का प्रतीक है और उसमें मानव-जीवन की गम्भीर समस्याओं का समाधान विद्यमान है। आज जबकि संसार में एक मनुष्य दूसरे मनुष्य को, एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को नीचा दिखाने में लगा है, एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के खून का प्यासा हो गया है, एक दूसरे की धन-सम्मति हड़पने में लोग व्याकुल हैं, विभिन्न राष्ट्रों के बीच तनाव, भेदभाव, प्रतिस्पर्धा और शास्त्रों की होड़ लगी हैं । विश्व पर युद्ध के बादल मँडरा रहे हैं तो ऐसे समय में बुद्ध के बताये मार्ग पर चलकर ही मानव-जाति को विनाश से उबारा जा सकता है तथा समाज का उत्थान किया जा सकता है।

निष्कर्षः

बौद्ध धम्म विभिन्न रोगों से पीड़ित आधुनिक समाज के लिए चिकित्सा शास्त्र है क्योंकि आज भी समाज ऊँच-नीच, छूआ-छूत जातिवाद, सम्प्रदायवाद और निहित स्वार्थ जैसे रोगों से ग्रस्त है। बुद्ध के महान उपदेश, सिद्धान्त और शिक्षाएँ 2500 वर्ष पहले भी मानव-कल्याण के स्रोत रहे हैं और आज भी हैं। पहले से कहीं अधिक प्रासंगिकता आज है। समाज के उत्थान में बौद्ध धम्म का योगदान अद्वितीय रहा है। समाजिक क्षेत्र में गौतम बुद्ध ने समाज में फैली विषमता को हटाकर समता, समानता, सहानुभूति, सहयोग, सद्भाव, करुणा, मैत्री, सदाचार को स्थापित किया। तथागत बुद्ध ने वर्णवाद, जातिवाद, छुआछूत, अंधविश्वास, ऊँच-नीच आदि सभी विषमतामूलक व्यवस्थाओं को खत्म करके समतावादी, लोकतांत्रिक समाज की स्थापना की थी। नारियों का शोषण, अत्याचार अन्याय से मुक्त किया था। खूँखार डाकू अंगुलिमाल को एक शिष्ट व्यक्ति में बदलकर उसे धम्म की दीक्षा दी और एक नयी भावना उसमें जगृत किया। सामाजिक क्षेत्र में गौतम बुद्ध ने लोकतांत्रिक समाज की स्थापना कर मानव-मानव के बीच सामाजिक न्याय दिलाया था, जो आज भी समाज में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावी हैं।

समाजिक विकास में बौद्ध धम्म का योगदान अद्वितीय रहा है। समाजिक क्षेत्र में गौतम बुद्ध ने समाज में फैली विषमता को हटाकर समता, समानता, सहानुभूति, सहयोग, सद्भाव, करुणा, मैत्री, सदाचार को स्थापित किया। तथागत बुद्ध ने वर्णवाद, जातिवाद, छुआछूत, अंधविश्वास, ऊँच-नीच आदि सभी विषमतामूलक व्यवस्थाओं को खत्म करके समतावादी, लोकतांत्रिक समाज की स्थापना की थी। नारियों का शोषण, अत्याचार अन्याय से मुक्त किया था। खूँखार डाकू अंगुलिमाल को एक शिष्ट व्यक्ति में बदलकर उसे धम्म की दीक्षा दी और एक नयी भावना उसमें जगृत किया। सामाजिक क्षेत्र में गौतम बुद्ध ने लोकतांत्रिक समाज की स्थापना कर मानव-मानव के बीच सामाजिक न्याय दिलाया था, जो आज भी समाज में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावी हैं।

संदर्भ ग्रंथ-सूचीः

1. प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति - अल्तेकर पृ॰ 82।
2. जातक, भाग 1, पृ॰ 413, 524, जातक, भाग 3, पृष्ट 287
3. इण्डियन टीचर्स ऑफ बुद्धिष्ट युनिभरसिटीज,वसुकृत-पृ॰ 116-31।
4. द डिक्लाइन ऑफ बुद्धिज्म इन इण्डिया,नील कंठ शास्त्री, पृ॰ 125
5. बुद्धिस्ट रेकार्डस ऑव द वेस्टर्न वर्ल्ड, पृ॰ 25, 26
6. डा0 अम्बेडकर और समाजिक न्याय, गुप्ता, आर0, 1994,नई दिल्ली
7. बुद्धिस्ट डाईलैक्ट, आर0 सांस्कृत्यायन, बुद्धिज्म मार्क्ससिस्ट एप्रोच, नई दिल्ली
8. भगवान बुद्ध और उनका धम्म-डॉ॰ बी॰ आर॰ अम्बेडकर
9. बौद्ध-धर्म के विकास का इतिहास, गोविन्दचन्द पाण्डेय, पृष्ट॰ 355-356
10. भगवान बुद्ध और उनका धम्म, डॉ॰ बी॰ आर॰ अम्बेडकर 2002
11. बौद्ध धम्म प्रसार और पुनरूत्थान, देवेन्द्र कुमार वैसन्तरी
12. बौद्ध दर्शन, राहुल सांकृत्यायन
13. बौद्ध धम्म दर्पण, डॉ॰ कमल प्रसाद बौद्ध
14. दर्शन-दिग्दर्शन,राहुल सांस्कृत्यायन
15. बौद्ध धर्म के 2500 वर्ष, पी॰ वी॰ बापट
16. बौद्ध संस्कृति, प्रो (डॉ॰) अंगने लाल
17 बुद्ध कालीन समाज और धर्म,डॉ॰ मदन मोहन सिंह
18 बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास -डॉ॰ गोविन्द चन्द्र पाण्डेय
19. बौद्ध धर्म और बिहार-श्री हवलदार त्रिपाठी